

नन्दीश्वर द्वीप-पूजन

(पं. दानतरायजी कृत)

(अडिल्ल)

सब परव में बड़ो अठाई परव है।
नन्दीश्वर सुर जाहिं लेय वसु दरव है॥
हमें सकति सो नाहिं इहाँ करि थापना।
पूजैं जिनगृह-प्रतिमा है हित आपना॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ-
जिनप्रतिमासमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ-
जिनप्रतिमासमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः ।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ-
जिनप्रतिमासमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् ।

(अवतार)

कंचन-मणि-मयभृंगार, तीरथ-नीर भरा।
तिहुँ धार दयी निरवार, जामन मरन जरा॥
नन्दीश्वर-श्रीजिन-धाम, बावन पुंज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंद-भाव धरों॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ-
जिनप्रतिमाभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

भव-तप-हर शीतल वास, सो चन्दन नाहीं।
प्रभु यह गुन कीजै साँच, आयो तुम ठाहीं॥ नन्दी.॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यः संसारतापविनाशनाय
चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तम अक्षत जिनराज, पुंज धरै सोहै।
सब जीते अक्ष-समाज तुम-सम अरु को है॥ नन्दी.॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्
निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम काम विनाशक देव, ध्याऊँ फूलनसौं ।
लहूँ शील-लच्छमी एव, छूटों सूलनसौं ।
नन्दीश्वर-श्रीजिन-धाम, बावन पुंज करों ।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनन्द-भाव धरों ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यः कामबाणविध्वंसनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नेवज इन्द्रिय-बलकार, सो तुमने चूरा ।
चरु तुम ढिंग सोहैं सार, अचरज है पूरा ॥नन्दी. ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपक की ज्योति-प्रकाश, तुम तन माहिं लसै ।
टूटै करमन की राशि, ज्ञान-कणी दरसै ॥नन्दी. ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो मोहान्धकार- विनाशनाय
दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

कृष्णागरु-धूप-सुवास, दश-दिशि नारि वरै ।
अति हरष-भाव परकाश, मानो नृत्य करै ॥नन्दी. ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं
निर्वपामीति स्वाहा ।

बहुविधि फल ले तिहुँ काल, आनन्द राचत हैं ।
तुम शिव-फल देहु दयाल, तुहि हम जाचत हैं ॥नन्दी. ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं
निर्वपामीति स्वाहा ।

यह अरघ कियो निज-हेत, तुमको अरपतु हों ।
'द्यानत' कीज्यो शिव-खेत, भूमि समरपतु हों ॥नन्दी. ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

कार्तिक फाल्गुन साढ़ के, अन्त आठ दिन माहिं ।

नन्दीश्वर सुर जात हैं, हम पूजैं इह ठाहिं ॥

(लक्ष्मीधरा)

एकसौ त्रेसठ कोडि जोजन महा ।

लाख चौरासिया एक दिश में लहा ॥

आठमों द्वीप नन्दीश्वरं भास्वरं ।

भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं ॥

चार दिशि चार अंजनगिरी राजहीं ।

सहस चौरासिया एक दिश छाजहीं ॥

ढोल-सम गोल ऊपर तले सुन्दरं ॥ भौन. ॥

एक इक चार दिशि चार शुभ बावरी ।

एक इक लाख जोजन अमल-जल भरी ॥

चहुँ दिशि चार वन लाख जोजन वरं ॥ भौन. ॥

सोल वापीन मधि सोल गिरि दधिमुखं ।

सहस दश महाजोजन लखत ही सुखं ॥

बावरी कौन दो माहिं दो रतिकरं ॥ भौन. ॥

शैल बत्तीस इक सहस जोजन कहे ।

चार सोलह मिलैं सर्व बावन लहे ॥

एक इक सीस पर एक जिन मन्दिरं ॥ भौन. ॥

बिम्ब अठ एक सौ रतनमयी सोहही ।

देव-देवी सरव नयन मन मोहही ॥

पाँच सौ धनुष तन पद्म-आसन परं ॥ भौन. ॥

लाल नख-मुख नयन श्याम अरु स्वेत हैं ।

श्याम-रंग भोंह सिर-केश छबि देत हैं ॥

वयन बोलत मनो हँसत कालुष हरं ॥ भौन. ॥

कोटि-शशि-भान-दुति-तेज छिप जात है।
 महा-वैराग-परिणाम ठहरात है॥
 वयन नहीं कहैं लखि होत सम्यक धरं॥
 भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ-
 जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

नन्दीश्वर-जिन-धाम, प्रतिमा-महिमा को कहै।
 'द्यानत' लीनो नाम, यही भगति शिव-सुख करै॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

रोम रोम पुलकित हो जाय, जब जिनवर के दर्शन पाय।।टेक।
 ज्ञानानन्द कलियाँ खिल जायँ, जब जिनवर के दर्शन पाय॥
 जिन-मन्दिर में श्री जिनराज, तन-मन्दिर में चेतनराज॥
 तन-चेतन को भिन्न पिछान, जीवन सफल हुआ है आज॥
 वीतराग सर्वज्ञ-देव प्रभु, आये हम तेरे दरबार।
 तेरे दर्शन से निज दर्शन, पाकर होवें भव से पार॥
 मोह-महातम तुरत विलाय, जब जिनवर के दर्शन पाय॥१॥
 दर्शन-ज्ञान अनन्त प्रभु का, बल अनन्त आनन्द अपार।
 गुण अनन्त से शोभित हैं प्रभु, महिमा जग में अपरम्पार॥
 शुद्धात्म की महिमा आय, जब जिनवर के दर्शन पाय॥२॥
 लोकालोक झलकते जिसमें, ऐसा प्रभु का केवलज्ञान।
 लीन रहें निज शुद्धात्म में, प्रतिक्षण हो आनन्द महान॥
 ज्ञायक पर दृष्टि जम जाय, जब जिनवर के दर्शन पाय॥३॥
 प्रभु की अन्तर्मुख-मुद्रा लखि, परिणति में प्रकटे समभाव।
 क्षण-भर में हों प्राप्त विलय को, पर-आश्रित सम्पूर्ण विभाव॥
 रत्नत्रय-निधियाँ प्रकटाय, जब जिनवर के दर्शन पाय॥४॥